नन्हें-मुन्नों को राह दिखाती हैं मंजुला

मंजुला ने 'डिस्लेक्सिया' से पीड़ित बच्चों को नई राह दिखाती है। यह एक प्रकार की 'लर्निंग' अयोग्यता है। इसमें बच्चा दिखता तो आम बच्चों की तरह है, परंतु पढ़ाई के दौरान अंक अच्छे प्राप्त नहीं कर पाता। भारत में इस तरह के बच्चों की संख्या आज करीब 30 करोड़ है। मंजुला ने इस दिशा में पिछले पाँच वर्षों से काम कर यह दिखाया है कि यह बच्चे आम बच्चों से काफी, बुद्धिमान और सजग हैं। इतना ही नहीं पहले इन बच्चों को माता-पिता कमजोर समझकर उसे अच्छी शिक्षा नहीं दे पाते थे, पर आज उन्हें समझ है कि वे उनको शिक्षा कैसे दें। इसी संकल्प को ध्यान में रखकर मंजुला पूजा श्राफ ने गुजरात के अहमदाबाद में 'प्रेरणा' और उसके बाद गरीब बच्चों के लिए 'विसामो शेल्टर होम' की स्थापना की है। आज उनका नाम दुनिया की जानी मानी हस्तियों में शामिल हो गया है। सन् 2002 में 'अमेरिकन बॉयोग्राफिकल सोसायटी' नार्थ कैरोलिना उन्हें 'वुमन आफ द ईयर' से सम्मानित कर चुकी है।

पृष्ठभूमि

अहमदाबाद से मैनेजमेंट की शिक्षा प्राप्त करने के बाद मंजुला ने गुजरात के अहमदाबाद में दिल्ली पब्लिक स्कूल की स्थापना 10 साल पहले की थी। आज वह उसकी 'चेयर पर्सन' हैं। 27 मई 1964

की पढ़ाई में लापरवाह समझकर उन पर दबाव डालते हैं या फिर मारते-पीटते हैं। इसी बात के मद्देनजर मंजुला ने 'प्रेरणा' की स्थापना डीपीएस में ही की। उनका कहना है कि अगर ये बच्चे हमारे निर्देशनों का पालन नहीं कर पाते तो क्यों न हम उनके रास्ते पर चलकर ही उन्हें पढ़ायें, सिखाएं, ताकि उन्हें समझने में आसानी हो। वह आगे कहती हैं कि इतिहास भी इस बात का गवाह है कि

स्कूल आते हैं पढ़ते और खेलते-कूदते भी हैं, लेकिन उनमें कुछ ऐसी कमी है कि वे परीक्षा में अच्छी तरह से लिख नहीं पाते और अच्छे अंक नहीं प्राप्त कर पाते। हालाँकि स्कूल ढंग से प्रस्तुत नहीं कर पाता। वह पाठ याद नहीं रख पाता, क्लासरूम में ध्यान कम देता है आदि। ऐसे बच्चे हर 'क्लास रूम' में करीब 20 प्रतिशत तक होते हैं। माता-पिता इन बच्चों

'विसामो शेल्टर होम' की स्थापना की है। इसमें गरीब और असहाय बच्चों को खाने-पढ़ने, मेडिकल सुविधाएं सब कुछ मुफ्त में दी जाती हैं। उन्हें अच्छी आदतें और रहन-सहन सिखाकर सभी स्कूल ऐसे बच्चों को पढ़ाने की जिम्मेदारी लें।

थी मंजिल कठिन

पाँच वर्ष पहले जब मंजुला ने प्रेरणा की स्थापना की थी तो शुरू-शुरू में जरा भी मदद नहीं मिलती थी। लोग हँसते थे और उन्हें अजीब नजरों से देखते थे। परंतु आज लोगों ने इसे समझा और जाना है। अब उन्हें विश्वास हो रहा है कि ऐसे बच्चों को भी अच्छी शिक्षा दी जा सकती है। लोग 'डिस्लेक्सिया' से परिचित हो रहे हैं। मंजुला यह भी कोशिश करती हैं कि माता-पिता इन बच्चों को अच्छी तरह समझें, क्योंकि वास्तव में ये बच्चे अधिक बुद्धिमान होते हैं। ऐसे बच्चों का पता तीन-चार वर्ष की उम्र में लगाया जा सकता है, लेकिन उनके माता-पिता इसे आसानी से स्वीकार नहीं कर पाते। मंजुला कहती हैं कि मेरे हिसाब से अब माता-पिता जागरुक हो गए हैं इसलिए समय रहते ही इसकी जाँच करवाएं।

सहायता मिल रही है। सरकार कोई फंड तो नहीं देती, पर ऐसे बच्चों को 20 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर पास करवा देती है। वह खुशी जाहिर करती हुई कहती हैं कि 'अभिषेक बच्चन' ने 'प्रेरणा' के लिए अपनी आवाज दी है। जहाँ कहीं भी वे वर्कशाप में या मीटिंग में जाते हैं। 'डिस्लेक्सिया' के बारे में लोगों को बताते हैं।

जरूरत है लोगों के जुड़ने के

मंजुला इस काम में सभी स्कूल के प्रिंसिपल, स्टेट सेक्रेटरी और अन्य उच्च पदाधिकारियों से आगे आने की अपील करती हैं ताकि हर राज्य में इन बच्चों को उचित शिक्षा दी जा सके। क्योंकि यह काम किसी एक के बस की बात नहीं है। उनकी इच्छा है कि हर राज्य में ऐसे स्कूलों की व्यवस्था होनी चाहिए। उन्हें खुशी है कि उन्होंने करीब 80 बच्चों को इस प्रकार की अयोग्यता से उबारा है और आगे भी सहायता करती रहेंगी ताकि ऐसे बच्चे भी सुनहरे भविष्य से वंचित न हों।

थी। आज वह उसकी 'चेयर पर्सन' हैं। 27 मई 1964 को जन्मी मंजुला का बचपन बड़े ही लाड़-प्यार में बीता, क्योंकि दो बहनों में वह छोटी हैं। चूंकि मंजुला राज घराने से हैं इसलिए उन्हें पर्दे में रहना पड़ता था। यही नहीं उनका बाहर निकलना, जोर से हँसना आदि मना था। ऐसे में मंजुला को हमेशा कुछ नया करने की इच्छा होती थी। हांलाकि उनके माता-पिता उनका अधिक सहयोग नहीं करते थे पर वे उन्हें मना भी नहीं करते थे। शादी के बाद जब वे अहमदाबाद आईं तो उनके व्यवसायी पति ने मंजुला को भरपूर सहयोग दिया।

हैं मंजुला

उड़ीसा के राज घराने में जन्मी मंजुला पूजा श्राफ ने अपनी मेहनत और लगन के बल पर यह सिद्ध कर दिया है कि इंसान अगर कुछ ठान ले तो मंजिल तक पहुँचना कोई मुश्किल नहीं

ऐसे मिली प्रेरणा

मंजुला जब 'डीपीएस' में पढ़ाती इन बच्चों को आठवीं कक्षा पास करवा देता है। परंतु उसके बाद वे उन्हें स्कूल से निकाल देते हैं। ऐसे में ये बच्चे कहाँ जायें, क्या करें? इस बात की चिंता माता-पिता को सताती रहती है। इस विषय पर गहन अध्ययन करने पर मंजुला ने पाया कि ये बच्चे न तो लापरवाह हैं और न ही मानसिक रोगी, बल्कि 'लर्निंग

आगे कहती हैं कि इतिहास भी इस बात का गवाह है कि विश्व में कई ऐसे अन्वेषक और विद्वान हुए हैं जो 'डिस्लेक्सिया' से पीड़ित थे। जिसमें गैलीलियो, राइट ब्रदर्स, विन्टसन चर्चिल, अलेक्जेन्डर, ग्राहम बेल आदि प्रमुख हैं।

मंजुला इन बच्चों को पढ़ाने वाली अध्यापिकाओं को विशेष प्रशिक्षण देती हैं क्योंकि बच्चे क्लासरूम में सबसे अधिक आपसी तालमेल करते हैं। इसके अलावा समय-समय पर 'काउंसिलिंग व वर्कशाप' के द्वारा बच्चों के विकास को समझा जाता है। ऐसे बच्चे को किस तरह शिक्षा दी जाए यह सीखने के लिए मात्र तीन महीने ही पर्याप्त होते हैं।